International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 128-129

मुक्तिबोध और क्लॉड ईथरली

मुकेश कुमार यादव
शोधछात्र, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

मुक्तिबोध की तमाम कहानियों की तरह ही क्लॉड ईथरली भी नाटकीय गति, आलोचनात्मक चिंतन और काव्यगत प्रतीकात्मकता लिए हुए चलती है। कहानी का परिवेश किसी सामान्य छोटे शहर के स्थापत्य के भीतर दो पात्रों के आपसी संवाद से निर्मित होता है। एक पात्र कथा का नैरेटर खुद है दूसरा वह जो कि अपनी पहचान एक सी0आई0डी0 के जासूस के रूप में कराता है।

एक पीली बिल्डिंग के भीतर क्या है? नैरेटर की इस जिज्ञासा को शांत करते हुए जासूस बताता है कि यह एक प्रसिद्ध पागलखाना है। दोनों की बातों के बीच घनी दूरियां है, एक दूसरे के प्रति शंका है, संदेह है। एक ऐसी अजनबीयत है जिसे उनके समाज की भीतरी बुनावट ने पैदा किया है। दोनों की बातचीत एक ओर इस अजनबीयत को दूर करने की कोशिश है तो दूसरी तरफ पागलखाने की वास्तविकता को जानने की। किन्तु इस बातचीत का महत्व आधुनिक पूंजीवादी सभ्यता के कुछ महत्वपूर्ण और दुर्दांत सच्चाईयों के उद्घाटन में है।

क्लॉड ईथरली यानी वह विमान चालक जो हिरोशिमा पर बम गिराये जाने वाले विमानों के साथ एक टोही विमान का चालक था; इस कहानी में उसका जीवन एक बड़े रूपक के बतौर बातचीत का हिस्सा बनता है। क्लॉड ईथरली का अमेरिकी या भारत के किसी छोटे शहर के पागलखाने में कैद होना सम्भव नही है, वह फैटेंसी के शिल्प में ही विद्यमान हो सकता है। नैरेटर द्वारा एक बड़े मकान की ऊँची छत वाले कमरे में जिज्ञासावश झांकना और पंखे से लटक रही क्लॉड ईथरली की लाश की खुली आंखों से नैरेटर की आँखों के लड़ जाने से ही स्वप्न कथा या फैटेंसी की शुरूआत होती है।

आधुनिक पूंजीवादी सभ्यता में मनुष्य के आन्तरिक विलगाव और उसकी भयावह परिणतियों का उद्घाटन कहानीकार का प्रयोजन है और इस प्रयोजन के लिए स्वप्न कथा का शिल्प अनिवार्य हो जाता है। मुक्तिबोध अपने एक अन्य विषय पूंजी के युग में बौद्धिकों की भूमिका को भी साथ–साथ लिए चलते हैं। क्लॉड ईथरली जो एक वास्तविक मनुष्य था, हिरोशिमा पर बमबारी करके नरसंहार करने के लिए जीवन भर अपराध बोध से जीता है उसी को अमेरिकी सरकार युद्ध का नायक मानती है और वह इसी रूप में अमेरिकी जनता में लोकप्रिय भी है किन्तु वह इस पहचान से मुक्ति चाहता है। वह भीतर से विभाजित है; उसका अपराध बोध उसे हिरोशिमा में बच्चों के सहायतार्थ राशि भेजने को प्रेरित करती है। वह अपनी इस थोपे गये नायकत्व की पहचान से मुक्ति चाहने के क्रम में कई अपराध करता है लेकिन हर बार उसे छोड़ दिया जाता था–

''क्लॉड ईथरली एक विमान चालक था! उसके एटम बम से हिरोशिमा नष्ट हुआ। वह अपनी कारगुजारी देखने उस शहर गया। उस भयानक बदरंग, बदसूरत कटी लोथों के शहर को देखकर उसका दिल टुकड़े–टुकड़े हो गया। उसको पता नही था कि उसके पास ऐसा हथियार है और उस हथियार का यह अंजाम होगा–

लेकिन फिर भी वह 'वार हीरो' या, महान था, क्लॉड ईथरली महानता नहीं, दण्ड चाहता था। दण्ड!

उसने वारदातें शुरू की जिससे कि वह गिरफ्तार हो सके जेल में डाला जा सके किन्तु प्रमाण के अभाव में वह हर बार छोड़ दिया गया।''[1]

क्लॉड ईथरली का जीवन इस कहानी में एक रूपक के बतौर दो लोगों की बातचीत में आकार लेता है–एक शोषणकारी सभ्यता का स्वार्थ और एक मनुष्य की आत्मा का सच आमने सामने संघर्ष की स्थिति में दिखाई देते हैं। सी0आई0डी0 का जासूस इस सच को अपने शब्द में इस प्रकार व्यक्त करता है–

''जो आदमी आत्मा की आवाज कभी–कभी सुन लिया करता है और उसे बयान करके उससे छुट्टी पा लेता है वह लेखक हो जाता है। आत्मा की आवाज को जो लगातार सुनता है और कहता कुछ नहीं है वह भोला–भाला, सीधा–साधा बेवकूफ है। जो उसकी आवाज बहुत ज्यादा सुना करता है और वैसा करने लगता है, वह समाज विरोधी तत्वों में यो ही शामिल हो जाया करता हैं। लेकिन जो आदमी की आवाज जरूरत से ज्यादा सुन करके हमेशा बेचैन रहा करता है वह निहायत पागल है। पुराने जमाने में सन्त हो सकता था। आजकल उसे पागलखाने में डाल दिया जाता है।''[2]

क्लॉड ईथरली का कथित पागलपन वास्तव में साम्राज्यवादी व पूंजीवादी सत्ता व समाज के प्रति एक आध्यात्मिक अशांति व उद्विग्नता है। वह सी0आई0डी0 कहानी के अन्तिम हिस्से में क्लॉड ईथरली के मानसिक विभाजन को पूंजी के युग में जीने व सांस लेने वाले तमाम मनुष्य के भीतरी विभाजन का भी प्रतीक बना देता है। वह कहता है–''हमारे अपने–अपने मन–हृदय–मस्तिष्क में ऐसा ही एक पागलखाना है जहां हम उन उच्च पवित्र और विद्रोही विचारों और भावों को फेंक देते हैं जिससे कि धीरे–धीरे या तो वे खुद बदलकर समझौतावादी पोशाक पहन सभ्य भद्र हो जाएं, यानी दुरूस्त हो जाएं या उसी पागलखाने में पड़े रहें–

आजकल हमारे अवचेतन में हमारी आत्मा आ गई है, चेतन में स्व–हित और अधिचेतन में समाज से सामंजस्य का आदर्श–भले ही बुरा समाज क्यों न हो! यही आज के जीवन विवेक का रहस्य है।''[3]

मुक्तिबोध अपनी कविताओं में बार–बार कहा है कि हृदय की पवित्रतम भावनाओं और बेहतर जीवन के सपनों को, विद्रोही भावों को, अन्तर्मन में रखने व अपनी निजता की सुरक्षा व कमजोरियों से लगाव के कारण पूंजीवादी समाज में तमाम चेतना सम्पन्न लोग एक विभाजित व अशांत जीवन जीने को विवश हैं। आत्मा की आवाज को सुनना और मन के अवचेतन में छोड़ दी गई उज्जवल भावनाओं को उनकी चाहरदीवारों से मुक्त कर जन समाज की बेहतरी के लिए किये जाने वाले संघर्षों से जोड़ देना मुक्ति का अन्तिम रास्ता है, चाहे वह अमेरिका हो या भारत।

पूंजीवाद एक विश्व व्यवस्था है और जिन मानव सम्बन्धों की उसने स्थापना की है वे वैश्विक प्रसार लिए हुए है। वह पीली बिल्डिंग जो पागलखाना है जिसमें क्लॉड ईथरली कैद है यह बात कथावाचक को रहस्यात्मक और अविश्वसनीय लगती है। वह जासूस से पूंछता है कि–''क्या यह हिन्दुस्तान नहीं है हम अमेरिका में ही रह रहे हैं?'' इस पर जासूस ने ठहाका मारते हुए कहा ''भारत के हर बड़े नगर में एक–एक अमेरिका का ही प्रतिरूप है।'' तुमने लाल ओंठवाली चमकदार, गोरी सुनहरी औरतें नही देखी उनके कीमती कपड़े नहीं देखे? शानदार मोटरों में घूमने वाले अतिशिक्षित लोग नहीं देखे?''[4]

निष्कर्ष यह है कि जिस तरह भारत के सभी नगरों में अभिजात्य वर्ग अमेरिका का ही प्रतिरूप है ठीक उसी प्रकार लूट व झूठ की सभ्यता के खिलाफ बेचैन आत्मा लिए लोग भी न केवल अमेरिका के बल्कि भारत के उन नगरों में आजाद है। क्लॉड ईथरली कहानी का जासूस पात्र यह भी कहता है कि–''क्लॉर्ड ईथरली हमारें यहां भले ही देह रूप में न रहे, लेकिन आत्मा की वैसी बेचैनी रखने वाले लोग तो यहां रह ही सकते है।''[5]

कहानी अन्त में जाकर कथावाचक के लिए आत्म साक्षात्कार में बदल जाती है। कहानी के नगर, भवन, पात्र–विचार, घटनायें और कुछ नहीं बल्कि मन के भीतर चल रहे भीषण द्वन्द्व और उस द्वन्द्व के कारण उभरती जीवन जगत की बेचैन समीक्षा ही वस्तु, रूप, मन के भीतर का वास्तविक जगत में घटना, क्रिया परिस्थिति का विन्यास लेकर कहानी बनाता है जिससे वह सम्प्रेषित ही नहीं विश्वसनीय भी हो सके।

सन् 1940–41 के आस–पास अपने अंतर्द्वन्द्व के प्रति सचेत होने के कारण इनकी विचाराधारा में परिवर्तन स्पष्ट लक्षित होता है। लेखक ने तत्कालीन अंतर्राष्ट्रीय युद्ववादी नीति का भारतीय सन्दर्भ में विरोघ किया है और उसे मानव सभ्यता के संकट के रुप में लिया है। इस कहानी के जरिये लेखक ने व्यंग्य से ब्रिटिश–अमरीकी सभ्यता को नंगाा कर दिया है। दूसरी ओर एक प्रबुद्ध चिन्तक की तरह भारत को अमरीकी प्रभाव के प्रति सचेत रहने की चेतावनी दी है। मुक्तिबोध भारत को भारत मानते हैं– पश्चित के कुप्रभावों से मुक्त भारत, पाप और शोषण को विरोधी भारत। शोषित वर्ग का पक्षधर होने के कारण कहानियां में जहाँ उत्पीड़ित वर्ग का चित्रण मिलता वहीं शोषित वर्ग का भी, मतलब यह कि बहुतेरे लोग ऐसे हैं जो पापाचार रूपी, शोषण रुपी डाकुओं को अपनी छाती पर बैठा समझते हैं। यह डाकू केवल बाहर का व्यक्ति ही नहीं है, अपितु घर का व्यक्ति भी है। इस प्रकार 'क्लॉड ईथलरी' मुक्तिबोधीय कल्पना किसी देश–विदेश के व्यक्ति विशेष की कहानी नहीं है– वह हम सबकी वास्तविक एवं ज्वलन्त समस्या है।

निष्कर्षतः 'क्लॉड ईथरली' कहानी में अमानवीय कृत्यों, जघन्य अपराधों, पापाचारों के विरूद्व आत्मा की जिस आवाज का आग्राह निहित है, वह नितान्त लौकिक एवं वास्तविक भावभूमि पर अवस्थित है। इसका नैतिक लक्ष्य हमारी उस उदासीनता को बेधता है जो मानवीयता की जलती पीड़ाओं को अनसुना कर देती है, उनके प्रति हमारे भीतर एक अलगाव बनाये रखती है। इस कहानी का फैटेंसी शिल्प कथा को एक रोमांचक नाटकीयता प्रदान करता हे। तथा अपने भाववादी रूवरूप में ही आधुनिक मानव नियति का गहरा यथार्थ बोध कराता है। कलाकार के नाते मुक्तिबोध ने इस कहानी के माध्यम से सजग युगबोध का दायित्व निभाया है। यहाँ हमें उनकी सचेत जगारूक संवेदनशील भारतीय आत्मा का भाव और स्वर विशेष रूप से सुनायी देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सम्पादक, अग्रवाल, रोहिणी, प्रतिनिधि कहानियाँ, : मुक्तिबोध, राजकमल पेपर बैक्स, सन् 2015 पृ0सं0 77
2. वही, पृष्ठ सं0 73
3. वही, पृष्ठ सं0 78–79
4. वही, पृष्ठ सं0 76
5. वही, पृष्ठ सं0 79